سُورَةُ التَّكَاثُر مَكِّيَّةٌ

सूरह तकासुर मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

आरंभ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ (1)

तुम्हें उलझा दिया (विमुख / असावधान कर दिया) बाहुल्य की होड़ (और अधिक पाने की लालसा) ने।

حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ (2) كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ (3)

यहां तक कि तुमने कब्रें जा देखीं (स्वयं जा पहुंचे)। [2] कदापि नहीं! शीघ्र (जल्द) ही तुम जान लोगे। [3]

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ (4) كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ (5)

फिर! कदापि नहीं! शीघ्र (जल्द) ही तुम जान लोगे। [4] कदापि नहीं! यदि तुम निश्चित ज्ञान जानते! [5]

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۙ (6)

तुम अवश्य भड़कती हुई आग (जहन्नम) को देखोगे।

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۙ (7)

फिर! तुम उसे अवश्य प्रत्यक्ष निश्चय (निश्चय की आंख) से देखोगे।

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ع (8)

फिर! तुमसे उस दिन अवश्य पूछा जाएगा नेमतों (सुख सुविधाओं) के बारे में।